शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ८ : नई दिल्ली : १६-२५ मई २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता की ओर विहार करते हुए सैंथिया का त्रिदिवसीय प्रवास सानंद परिसम्पन्न कर कोलकाता के सन्निकट पधार गए हैं। ४ जून को आचार्यप्रवर का कोलकाता महानगर की सीमा में पदार्पण हो जाएगा। तदुपरान्त विभिन्न उपनगरों की यात्रा और वहां पूर्व निर्धारणानुसार प्रवास करते हुए आचार्यप्रवर दो जुलाई को नवनिर्मित 'महाश्रमण विहार' में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। ३० जून को आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में दीक्षा समारोह समायोज्य है। कोलकातावासियों में आचार्यप्रवर के पदार्पण और चतुर्मास के संदर्भ में उल्लासमय वातावरण है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर

कोलकाता में छाई है आपकी लहर

८ मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः गजम्बा से लकड़ापहाड़ी की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में सामने की ओर से आती हुई श्वेताम्बर मूर्तिपूजक खरतरगच्छ के विचक्षणाश्री मंडल संप्रदाय की साध्वी चंदनबालाजी की शिष्या साध्वी चन्द्रप्रभाजी आदि साध्वियां आचार्यप्रवर से मिलीं। पूज्यप्रवर ने मार्ग में कुछ क्षण विराजमान होकर उनसे वार्तालाप किया। वे बोलीं--'आचार्यश्री! अभी कोलकाता में आपकी लहर छाई हुई है, आचार्यप्रवर ने उनसे पूछा--'आगम स्वाध्याय चलता है ना?' वे बोलीं--'हां, आगम स्वाध्याय होता है। अध्ययन के बिना तो अंधकार है। साधु जीवन में संयम और स्वाध्याय तो जरूरी है।' साध्वीजी बोलीं--'कई वर्षों पूर्व आचार्य महाप्रज्ञजी से मिलना हुआ था। वे तो चलते-फिरते पुस्तकालय थे। आप भी पुण्यधर आचार्य हैं। इस प्रकार कुछ क्षण वार्तालाप के उपरान्त आचार्यप्रवर अपने गंतव्य की ओर गतिमान हो गए और साध्वियां अपने गंतव्य की ओर।

आज का विहार पथ भी निर्मीयमाण सड़क के रूप में था। कच्चे पथ में वाहनों के आवागमन से उड़ने वाली मिट्टी और उबड़-खाबड़ पथरीला पथ राहगीरों के लिए कुछ परेशानी उत्पन्न कर रहे थे, किन्तु महातपस्वी आचार्यप्रवर का समत्व भाव अक्षुण्ण था। प्रखर आतप बरसाने वाला सूर्य आज बादलों की ओट में अदृश्य बना हुआ था। इस कारण वातावरण कुछ शीतलता को धारण किए हुए था। मार्ग के परिपार्श्वस्थ में पूरी तरह टूटा हुआ पुल आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। गिरने के बाद दृष्टिगोचर हो रहा उसका रूप गिरने के भयावह घटनाक्रम को अनुमानित करवा रहा था। मार्ग में यत्र-तत्र खजूर और पीपल के वृक्ष परस्पर मिले हुए दिखाई दे रहे थे। खजूर से लिपटे हुए पीपल के तने को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सांप लिपटा हुआ हो। एक स्थान पर खजूर और पीपल के साथ बड़ का भी योग मिल गया। तीनों वृक्ष इस तरह परस्पर गुत्थमगुत्था हुए दिखाई दे रहे थे कि तीनों को अलग-अलग करना और मानसिक रूप में अलग-अलग कर देखना भी मुमकिन नहीं लग रहा था। आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण रूककर उन तीनों पेड़ों के संयोग को निहारा। लगभग १२.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर लकड़ापहाड़ी में स्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी

अपने आपको विप्रसन्न बनाए। प्रसन्न होना सामान्य बात है, किन्तु विशेष प्रसन्नता को प्राप्त करना महत्त्वपूर्ण बात होती है। समता की साधना के द्वारा विशेष प्रसन्नता को प्राप्त किया जा सकता है। समता के अभाव में प्रसन्नता खंडित होती है। लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, निंदा-प्रशंसा, मान-अपमान आदि की द्वंद्वात्मक स्थितियों में आदमी को सम रहने का प्रयास करना चाहिए। पुरुषार्थ करने के बाद सफलता और असफलता जो कुछ मिले, उसमें समत्व रखने का प्रयास करना चाहिए। विरोध और सम्मान दोनों स्थितियों में सम रहना साधना होती है।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित ग्रामवासियों को प्रेरणा प्रदान कर अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। विद्यालय की ओर से प्रधानाध्यापक श्री रामप्रवेश सिंहजी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' की स्मृतिसभा

कार्यक्रम के दौरान मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' की स्मृतिसभा का उपक्रम भी रहा। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उनके विषय में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार मुनिश्री मोहनलालजी स्वामी शार्दूलपुर के धाड़ेवा परिवार से संबद्ध थे। करीब चौदह वर्ष की तरुणावस्था में विक्रम संवत १९९९ में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से मुनि दीक्षा स्वीकार की। उस दिन कुल अठाईस दीक्षाएं हुईं। वि.सं. २०१४ में उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया गया। वे मुनिश्री दुलीचन्दजी स्वामी 'दिनकर' और साध्वी जडावांजी के संसारपक्षीय भानजे थे। करीब पच्चीस वर्षों तक वे अपने संसारपक्षीय मौसेरे भाई शासन गौरव मुनिश्री बुद्धमलजी स्वामी के साथ रहे। संस्कृत और हिन्दी भाषा में उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने कई चतुर्मास गुरुकुलवास में भी किए। गत वैशाख शुक्ला सप्तमी को रात्रि ८.३५ बजे उनका प्रयाण हो गया। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक उन्नति करती रहे। मुनि मधुकुमारजी को लम्बे समय तक उनके साथ रहने का अवसर मिला।'

इस प्रसंग में मुनि कोमलकुमारजी और मुनि सुधांशुकुमारजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आदिवासियों के बीच शांतिदूत

६ मई। वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। परम पावन आचार्यप्रवर का ४४वां दीक्षा दिवस। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः लकड़ापहाड़ी से कुरुवा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में एक ग्रामीण महिला ने अपनी पीड़ा पूज्यप्रवर के समक्ष अभिव्यक्त की तो आचार्यप्रवर ने उसे मंगलपाठ सुनाया। बाबूपुर के ग्रामीणजन मार्ग में आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। हरिपुर स्थित 'हैप्पी चाइल्ड स्कूल' के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। दुमका शहर के नागरिक कुतूहल के साथ अहिंसा यात्रा को निहार रहे थे और करबद्ध होकर पूज्यप्रवर के चरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रहे थे। आकाश में छाए हल्के बादलों के कारण आज भी विहार के प्रारंभिक भाग में गर्मी कुछ उपशांत रही, किन्तु विहार के मध्य भाग में उसने कुछ उग्र रूप धारण कर लिया। थोड़ी देर बाद पुनः बादलों ने सूर्य किरणों को बाधित कर दिया तो गर्मी का अहसास कुछ कम हुआ।

आचार्यप्रवर इन दिनों 'संथाल' इलाके में विहरण कर रहे हैं। संथाल भारत का प्रमुख आदिवासी समूह है। इस जनजाति का मुख्यतः निवास स्थल झारखंड है। पश्चिम बंगाल, उड़ीसा व असम के कुछ हिस्से में भी इसका अस्तित्व है। इस जनजाति की भाषा को संथाली कहा जाता है। 'ओलाचिकी' लिपि संथाल जनजाति में प्रतिष्ठा प्राप्त है। संथाल समाज में मुख्य व्यक्ति इनका मांझी होता है। मदिरापान तथा

मांस भोजन इनके दैनिक जीवन का अंग है। अन्य आदिवासी समूहों की तरह इनमें भी जादू-टोना प्रचलित है। यहां के लोकसंगीत/गीत और नृत्य में यहां की संस्कृति झलकती है। करीब १४.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर कुरुवा में पधारे। आज का प्रवास पिछड़ी जातीय आवासीय छात्रावास में हुआ। लगभग पांच साल बाद खुले इस स्थान की सफाई आदि एक दुष्कर कार्य था। आचार्यप्रवर पधारे तब तक वह कार्य चल रहा था इस कारण आचार्यप्रवर प्रवास स्थल के सामने स्थित आशीष कुमार मंडल के निवास घर में पधारे और वहां आसीन हुए, किन्तु स्थान की अल्पता के कारण आचार्यप्रवर उस स्थान को छोड़कर साध्वीप्रमुखाजी के आज के प्रवास स्थल विद्यालय में पधारे। आज का प्रातराश वहीं हुआ और मुख्य कार्यक्रम की समायोजना भी वहीं हुई।

परम पावन आचार्यप्रवर का ४४वां दीक्षा दिवस

साध्वीवृन्द के प्रवास स्थल में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्यप्रवर के ४४वें दीक्षा दिवस के संदर्भ में आचार्यप्रवर की अभिवन्दना और चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी वाचन का उपक्रम रहा। आचार्यप्रवर का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में भी समायोजित होता है, इस संदर्भ में अनेकानेक युवक आज पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थे।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मुनि जिस श्रद्धा से उत्तम प्रव्रज्या स्थान के लिए घर से निकला, उस श्रद्धा को पूर्ववत् बनाए रखे और आचार्य-सम्मत गुणों का अनुपालन करे।

अवीतराग आत्मा में राग-द्वेष के भाव उभर सकते हैं। भाव मन, वचन व काय की प्रवृत्ति में संप्रविष्ट हो सकते हैं। हमने जब दीक्षा स्वीकार की, तब तीन करण तीन योग से सर्व सावद्य योग का प्रत्याख्यान किया था। सर्वसावद्य योग परित्याग करना बहुत बड़ी बात होती है। हम लोग मानों धन्य हो गए कि हमने संयम रत्न, सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण किया है। हमारा यह निष्क्रमण जितना निष्कलंक रह सके, वैसा प्रयास करना चाहिए। कहीं धब्बा लग भी जाए तो उसे शोधन के द्वारा मिटाने का प्रयास करना चाहिए।

हमारे यहां मुनि दीक्षा होती है और समणी दीक्षा भी होती है। समणी दीक्षा परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के युग में शुरू हुई थी। कितनी-कितनी आत्माओं ने समणी दीक्षा को स्वीकार किया। समणश्रेणी के उत्पादन-निष्पादन में परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का कितना श्रम लगा, कैसे यह चिन्तन उत्पन्न हुआ, विकसित हुआ और कैसे क्रियान्वित भी हो गया। इस श्रेणी के चिन्तन-मंथन और लालन-पालन में साध्वीप्रमुखाजी का कितना समय लगा होगा। मुख्यनियोजिकाजी को तो प्रथम समणी नियोजिका के रूप में नियुक्त किया गया था। प्रथम समणी दीक्षा लेने वालों में ये भी एक थे और इन्होंने प्रथम नियोजिका के रूप में समणश्रेणी को अपनी सेवाएं दी थीं। समणश्रेणी के संदर्भ में इनकी अपनी अनुभूतियां रही होंगी। साध्वी दीक्षा के बाद भी ये समणश्रेणी से कितनी जुड़ी रहीं। इन्होंने लंबे समय तक समणश्रेणी के संरक्षण/व्यवस्थापन में अपना योगदान दिया। फिर मैंने इनसे कहा कि अब साध्वियों की व्यवस्था में और ज्यादा संलग्न बन जाओ।

समणश्रेणी के संरक्षण और विकास में योगदान देना सेवा का कार्य है। मेरा यह सिद्धान्त बन गया कि सेवा से मेवा मिलता है। सेवा कभी निष्फल नहीं जाती। कोई भी, कभी भी और कुछ भी सेवा कर लो, वह सफल होती है। हमें तत्काल पता चले या न चले, जल्दी मिले या देरी से मिले, किन्तु सेवा का फल अवश्य मिलता है। जिसके लिए जो सेवा उपयुक्त है, उसके द्वारा वह सेवा की जानी चाहिए।

समणश्रेणी व मुमुक्षु श्रेणी के व्यवस्थापन के लिए साध्वीवर्याजी को पावन पथदर्शन

मैंने साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी को समणश्रेणी के संरक्षण/व्यवस्थापन का दायित्व दिया है। (आचार्यप्रवर ने साध्वीवर्याजी को संबोधित कर कहा--देखो, तुम्हें भी इस कार्य में अच्छा ध्यान देना है। ऐसा मानना चाहिए कि समणश्रेणी नए युग में प्रवेश कर रही है। समणश्रेणी और ज्यादा विकसित हो, कार्यकारी बने। समणश्रेणी के संदर्भ में कई कार्य हो सकते हैं, तुम्हें उन पर ध्यान देना है। जैसे--

- कुछ ऐसी समणियां सामने रहें, जिन्हें कभी भी विदेश कार्य में नियोजित किया जा सके। जिनमें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और विदेशों में कार्य करने की क्षमता भी हो। जिन्हें कभी भी विदेश भेजने में किसी प्रकार की दिक्कत न हो। ऐसी कुछ समणियों की सूची तैयार रहे।
- कुछ समणियां ऐसी रहें जो जैन विश्वभारती संस्थान, मान्य विश्वविद्यालय को अपनी सेवाएं दे सकें। वे ज्ञान के विकास में, अध्यापन, शोध कार्य आदि में अपनी सेवाएं दे सकें।
- समणियों में जितनी प्रतिभा हो, उसके अनुसार उनमें ज्ञान का विकास भी होना चाहिए। आगम स्वाध्याय चलना चाहिए। उनका वैदुष्य और बाहुश्रुत्य विकसित होना चाहिए। कई समणियां अच्छी विदुषी होनी चाहिए। ऐसी कुछ समणियां सामने रहनी चाहिए। विशेष रूप से वे जैन धर्म की अच्छी प्रवक्ता हों, जैन धर्म के विषय में अपने विचारों को अच्छे रूप में प्रस्तुत कर सकें, अच्छी सैद्धान्तिक व्याख्या कर सकें, ऐसी प्रभावशाली समणियां समणश्रेणी में रहनी चाहिए।
- समणश्रेणी के आचार, संस्कार और व्यवहार और ज्यादा अच्छे बन सकें।
- किन-किन समणियों का श्रेणी आरोहण होना चाहिए, उनकी खुद की भावना हो और उपयुक्तता भी हो तो इस पर ध्यान देना। आचार्यप्रवर को बताना कि अमुक-अमुक समणी का श्रेणी आरोहण हो जाना चाहिए।
- वर्गों की व्यवस्था अच्छी रहे। अग्रणी और जरूरतमंद समणियों को सहयोगिनी समणियां मिलनी चाहिए। एक अग्रणी के पास एक अच्छी सहयोगिनी तो रहे ही, यथासंभव ऐसा प्रयास करना चाहिए। समणियां चित्त समाधि में रहें, ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।
- समणश्रेणी में गुणवत्ता के साथ संख्या भी वृद्धिगंत हो।
- नवदीक्षित समणियों की सार-संभाल पर विशेष ध्यान रहना चाहिए। उन्हें अच्छे संस्कारों के रूप में विशेष खुराक मिलनी चाहिए। उनकी सुव्यवस्था भी रहनी चाहिए।

बोधार्थी और मुमुक्षु बहनों का जिम्मा भी तुम्हारा (साध्वीवर्या का) है। उनका अच्छा विकास हो, उनमें ज्ञान और संस्कार विकसित हों, यह भी तुम्हें ध्यान रखना है। किस बोधार्थी, मुमुक्षु की समणी दीक्षा हो सकती है, इस पर भी तुम्हें ध्यान देना है।

साध्वीवर्या संबुद्धयशा! जैसा कि मैंने कहा अब समणश्रेणी नए युग में प्रवेश हो रहा है तो तुम्हें भी अपनी शक्ति का समुचित रूप में नियोजन कर समणश्रेणी के व्यवस्थापन में अपना योगदान देना है। अच्छे ढंग से कार्य करना है, पर मस्तिष्क पर ज्यादा भार नहीं रखना है।

युवा दिवस पर युवकों को युवामनीषी का संदेश

आज युवा दिवस का प्रसंग है। युवावस्था बड़ी काम की होती है। बचपन तो कुछ सीखने और लाड-प्यार प्राप्त करने की अवस्था होती है। वृद्धावस्था में ज्यादा भागदौड़ करना मुश्किल हो सकता है। युवक शारीरिक और बौद्धिक शक्ति से परिपक्वता प्राप्त हो जाए तो युवक के लिए कार्य करने में सुगमता हो सकती है। सामान्यतया युवक में कार्य करने की शक्ति होती है। युवावस्था में आदमी काम कर सकता

है। युवकों को यह ध्यान देना चाहिए कि शक्ति कहीं विध्वंस में न लगे। शक्ति अच्छे व पवित्र कार्य और परोपकार में लगे तो वह अच्छी बात होती है। युवकों की शक्ति विध्वंसात्मक न बने। विध्वंस करें तो पाप कर्मों का करें, विध्वंस करें तो बुराइयों का करें, किसी को अनावश्यक तकलीफ देने वाला विध्वंसक काम युवकों को नहीं करना चाहिए। शक्ति का विकास और शक्ति का अच्छा उपयोग कर युवा व्यक्ति अपने जीवन में सौफल्य को प्राप्त हो सकता है।'

शुक्लता के प्रतीक हैं आचार्यप्रवर

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर की वर्धापना में कहा--'आज पूज्यप्रवर का दीक्षा दिवस है। वैशाख मास आचार्यप्रवर के जीवन से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। वैशाख मास में भी शुक्लपक्ष का आचार्यप्रवर के जीवन के साथ विशेष जुड़ाव है। आचार्यप्रवर के जीवन में बहुमुखी शुक्लता है। इसका एक राज यह हो सकता है कि आपके जीवन में अनेक कार्य शुक्लपक्ष में सम्पन्न हुए। जन्म, दीक्षा का निर्णय, दीक्षा, साझ के अग्रणी के रूप में नियुक्ति, युवाचार्य महाप्रज्ञजी के अंतरंग कार्यों में सहयोगी के रूप में नियुक्ति, महाश्रमण पद प्रतिष्ठापना, युवाचार्य मनोनयन और आचार्यपद पदाभिषेक--आचार्यप्रवर के जीवन से संबंधित ये सारे प्रसंग शुक्लपक्ष में घटित हुए। ऐसा कहा जा सकता है कि आचार्यप्रवर के चारों ओर शुक्लता ही शुक्लता है। आज आपके दीक्षा दिवस पर आपसे यही प्रार्थना करूंगी कि आपके जीवन में जो शुक्लता है, वह हम सभी साधु-साध्वियों में भी संप्रेषित करवाएं ताकि हम भी शुक्लता को प्राप्त कर सकें। आचार्यप्रवर का उपशम, बाह्य और आंतरिक रूप तथा सब प्राणियों के प्रति आपका कृपाभाव अद्भुत है। आप अद्भुत निधियों के ईश भी हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी ने आपके लिए दो शब्दों का प्रयोग किया था--महातपस्वी और महाश्रमिक। इन दोनों शब्दों को आचार्यप्रवर के जीवन में साकार देखा जा सकता है। आचार्यप्रवर का संकल्पबल अनुत्तर है। कैसी भी परिस्थितियां आ जाएं, आपका संकल्प अडोल रहता है।

आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। संभवतः इसीलिए काफी बड़ी संख्या में युवक यहां उपस्थित हैं। परमपूज्य आचार्यप्रवर के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हमारे समाज की युवा पीढ़ी भी उत्तरोत्तर अपने चरित्रबल को पुष्ट बनाती हुई संघ की सेवा में समर्पित रहे। आचार्यप्रवर हम सबमें ऐसा संस्कार भरें कि हम भी आपकी तरह अपनी साधना को और अधिक तेजस्वी बनाएं और स्वयं तेजस्वी बनकर संघ की तेजस्विता में योगभूत बनें।'

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्यप्रवर ने आज के दिन दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा स्वीकार करने का अर्थ है अपने जीवन को सार्थक और सफल बनाने की दिशा में प्रस्थान करना। आचार्यप्रवर इन्द्रिय विजय की दिशा में निरंतर गतिमान हैं। मानों इन्द्रिय संयम की साधना आपकी सहज रूप में सधी हुई है। आपके दीक्षा दिवस पर यही मंगलकामना करती हूं कि हम भी अपनी इन्द्रिय विजय की साधना में निरंतर आगे बढ़ते रहें।'

साध्वीवर्याजी ने आचार्यप्रवर की अभिवन्दना में कहा--'बालक मोहन ने चिन्तन के आधार पर साधुत्व स्वीकार करने का संकल्प किया और मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। आचार्यप्रवर श्रमण से महाश्रमण, तपस्वी से महातपस्वी और श्रमिक और महाश्रमिक बने। इसके मूल में समर्पण है। साधुत्व, आप्तवचन, गुरु और संघ के प्रति समर्पण से आपने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। आज इस पावन दिवस पर मैं आचार्यप्रवर के समर्पण भाव की अभिवन्दना करती हुई यही आशीर्वाद चाहती हूं कि ये चारों समर्पण मेरे भीतर भी आएं और मैं अपनी योग्यताओं को विकसित कर सकूं। आज आचार्यप्रवर ने समणश्रेणी और मुमुक्षु श्रेणी

के संदर्भ में जो दिशा-दर्शन प्रदान किया है, मैं उस अनुरूप कार्य कर सकूं। आपश्री ने फरमाया कि निर्भार रहकर कार्य करना है। मैं पूज्यप्रवर की छत्रछाया में निश्चिंत और निर्भार हूं। मैं चाहती हूं कि मैं कार्य की चिन्ता से ही नहीं, कर्मों से भी निर्भार बनती रहूं।'

मुख्यमुनिश्री ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में कहा--'आज परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर का ४४वां दीक्षा दिवस है। हम आचार्यप्रवर के संयम पर्यवों की उज्ज्वलता का अभिनन्दन करते हैं। आचार्यप्रवर का जीवन पंचाचार से समृद्ध है। आचार्यप्रवर की ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चारित्राराधना, तपाराधना और वीर्याराधना अनुत्तर है। मैं आज के दिन आचार्यप्रवर से यही कामना करता हूं कि मेरे संयम पर्यवों की भी उज्ज्वलता उत्तरोत्तर वृद्धिगंत होती रहे और आचार्यप्रवर के कुशल नेतृत्व में पूरा धर्मसंघ पंचाचार की साधना में विकास करता रहे।'

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री बीसी भलावत और महामंत्री श्री विमल कटारिया ने पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। अभातेयुप के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत को प्रस्तुति दी गई। अभातेयुप के अध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमारजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने दीक्षा दिवस के संदर्भ में प्रसंगवश कहा--'मैं श्रद्धा भावना के साथ परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का विशेष रूप से स्मरण करता हूं। श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' को यहां बैठे-बैठे वंदन करता हूं। उनके प्रति विनय और सम्मान का भाव अर्पित करता हूं। भावनात्मक व कुछ मानसिक, वाचिक और कायिक रूप में अपनी भावना उनके प्रति व्यक्त करता हूं।'

समुपस्थित ग्रामीण जनता ने आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महातपस्वी की सेवा में समर्पित प्रकृति

रात्रि में बह रही शीतल हवा के कारण मध्य रात्रि के बाद ठंड का अहसास होने लगा, जो प्रातःकाल तक क्रमशः बढ़ता गया। वैशाख मास की परिसम्पन्नता के दिनों में ऐसी ठंड आश्चर्य का विषय थी। पूज्यप्रवर की पटना व उसके पश्चात भागलपुर की यात्रा के बाद प्रचंड गर्मी के कयास लगाए जा रहे थे, किन्तु कुदरत अतिशयधर आचार्यप्रवर की सेवा में मानों तन्मयता के साथ लगी हुई है। जब कभी प्रलंब विहार हो या विहार में विलंब की संभावना हो, प्रायः हर बार प्रकृति अपना ऐसा रूप बनाती है कि वातावरण में शीतलता छा जाती है। कभी एक रात्रि पूर्व में वर्षा हो जाती है तो कभी विहार के दौरान आकाश मेघाच्छन रहता है। कभी वृक्षों की छाया आतप को रोकने का कार्य करती है तो कभी तेज ठंडी हवा। यह कहना तो कठिन है कि यह महज संयोग है अथवा कोई चमत्कार, किन्तु अचानक प्राकृतिक प्रतिकूलता का अनुकूलता में परिवर्तित हो जाना सबको आश्चर्यान्वित तो कर ही देता है तथा एक विचार धारणा के रूप में और अधिक पुष्ट बन जाता है कि ऐसे महापुरुषों की सेवा में मानव ही नहीं, दिव्य शक्तियां भी सन्नद्ध रहती हैं।

वित्त नहीं है अंतिम त्राण

१० मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः कुरुवा से बरमसिया की ओर प्रस्थित हुए। रात्रि से वातावरण में व्याप्त ठंड का अहसास अभी तक बना हुआ था। ऐसे में आज का प्रलंब विहार अनुकूल वातावरण में होने की संभावना नजर आ रही थी। काठीपोरिया स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय के प्रार्थनालीन बच्चों को

पूज्यप्रवर ने क्षण भर रुककर निहारा। पत्ताबाड़ी के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त किया। इस आदिवासी क्षेत्र में पूर्णरूपेण पक्के मकान बहुत ही कम हैं। कुछ मकानों की दीवारें और फर्श भले पक्के हों, किन्तु प्रायः मकानों की छतें कच्ची ही हैं। स्थानीय परिवेश लोगों की गरीबी को दर्शाता है। अनुकूल वातावरण में करीब १५.० किमी का विहार कर आचार्यप्रवर बरमसिया में स्थित पंचायत सचिवालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'गृहस्थ जीवन में धन भी उपयोगी होता है। पैसे का दुनिया में महत्त्व है। इससे जीवन की कितनी-कितनी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, किन्तु वित्त अंतिम त्राण नहीं है। गृहस्थावस्था में वित्त पर ध्यान देना होता है, उसके साथ वृत्त (चरित्र) पर भी ध्यान देना चाहिए। एक है अर्थ दूसरा है अर्थाभास। न्याय से अर्जित किया गया पैसा अर्थ है और अन्याय से अर्जित पैसा अर्थाभास है। आदमी अर्थाभास से यथासंभव बचने का प्रयास करे, यह काम्य है। कोई उपासना करे या नहीं, यदि ईमानदारी जीवन में है तो मानना चाहिए कि किसी रूप में धार्मिकता उसके जीवन में है। आदमी को ऐसा प्रयास करना चाहिए कि उसके जीवन में कहीं कोई अनैतिकता का दाग न लगे।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए।

स्मृति शक्ति की अभिवन्दना

आज प्रातः सूर्योदय के उपरान्त मुनि गौतमकुमारजी, मुनि सुधांशुकुमारजी और मुनि मृदुकुमारजी ने अपने दीक्षा दिवस के संदर्भ में आचार्यप्रवर को वंदना की। तदुपरान्त उन्होंने महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी को वंदन किया। साध्वीप्रमुखाजी को आचार्यप्रवर ने फरमाया--'इन्हें दीक्षा लिए एक दशक सम्पन्न हो गया।' एक संत बोले--'आचार्य महाप्रज्ञजी ने इनके लिए दीक्षा के दिन 'नचिकेता' शब्द का प्रयोग किया था। इस पर मुनि सुधांशुकुमारजी बोले--'हमारे दीक्षा समारोह में साध्वीप्रमुखाजी ने 'नचिकेता' की कहानी सुनाई थी।' आचार्यप्रवर ने तुरंत कहा--'नहीं, वह कहानी मुख्यनियोजिकाजी ने सुनाई थी।' आचार्यप्रवर ने मुख्यनियोजिकाजी से पूछा--'क्यों, ठीक बात है न?' मुख्यनियोजिकाजी ने कुछ क्षण सोचते हुए हामी भरी। साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'आचार्यप्रवर की स्मृति शक्ति विलक्षण है। हमारी कही हुई बात हमें याद नहीं रहती, किन्तु आचार्यप्रवर को याद रह जाती है। कई बार आचार्यप्रवर वर्षों पुरानी घटना का हूबहू वर्णन कर देते हैं।' मुख्यनियोजिकाजी ने कहा--'स्वामी विवेकानंद की स्मृति के विषय में कहा जाता है कि उनकी स्मृति बहुत तीक्ष्ण थी, वही बात आचार्यप्रवर में देखी जा सकती है।' साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'हम तो आचार्यप्रवर की स्मृति शक्ति की अभिवन्दना करते हैं।'

११ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः बरमसिया से लगभग ७.८ किमी का विहार कर सिकारीपाड़ा पधारे। मार्ग में बसमसिया और माहुलपहाड़ी के लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। सिकारीपाड़ा में स्थित 'प्लस टू हाईस्कूल' में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'दुनिया में दान का महत्त्व है। जरूरतमंद को उसकी अपेक्षित वस्तु का दान दिया जाता है। दान से एक-दूसरे को सहयोग भी मिल सकता है। हमारी दुनिया में सहयोग की परंपरा चलती भी है। दुनिया में रहकर सर्वथा निरपेक्ष होकर जीना कठिन हो सकता है। दान अनेक रूपों में हो सकता है। किसी को ज्ञान देना, चारित्र देना, मोक्षपथ पर स्थापित कर देना पारमार्थिक दान है, धर्मदान है। शुद्ध साधु को शुद्ध दान देना भी धर्मदान की कोटि में है। अभयदान को दानों में श्रेष्ठ दान कहा गया है। समस्त जीवों की हिंसा का त्याग

करना अभयदान है, वह भी धर्मदान है। दान को विभिन्न रूपों में विश्लेषित किया जा सकता है। पारमार्थिक-धार्मिक दान के द्वारा अपनी आत्मा को उज्ज्वल बनाया जा सकता है।'

नक्सल प्रभावित भयावह जंगल में बेखौफ बढ़ा शांतिदूत का कारवां

१२ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः सिकारीपाड़ा से सरसडंगाल की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान पथराकटो के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग में यत्र-तत्र गिरे वृक्ष कल के तूफान की भयावहता के साक्ष्य थे। कल की वर्षा से प्रभावित हवा कुछ शीतलता लिए हुए थी।

आज के विहार पथ का प्रारंभिक भाग जंगल में था। आरोह-अवरोह लिए इस पथ के दोनों ओर हजारों हरे-भरे सघन वृक्ष इस क्षेत्र को जंगल का रूप प्रदान किए हुए हैं। बताया गया कि यह क्षेत्र नक्सली क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है। परिपार्श्वस्थ खदानों में से निकाले जा रहे पत्थरों से भरे प्रत्येक वाहन से पैसा वसूलना इन नक्सलियों का दैनान्दिन कार्य है। कई घटनाएं नक्सलियों की उग्रता की साक्षी हैं। जिनमें नक्सलियों द्वारा धनहरण और अपहरण ही नहीं, कितने-कितने लोगों का प्राणहरण भी किया गया है। विहार के दौरान पुलिसकर्मी और अन्य लोग इन घटनाओं का जिक्र कर रहे थे। हल्के पहाड़ी भूभाग में बने इस जंगल में स्थित नक्सलियों से बचना राहगीरों के लिए एक दुष्कर कार्य है। इसलिए इस क्षेत्र में नक्सलियों का प्रभुत्व स्पष्ट देखा जा सकता है। इस भयावह जंगल में भी शांतिदूत आचार्यप्रवर का विशाल कारवां बेखौफ अपने गंतव्य की ओर गतिशील था।

विहार पथ के उत्तरार्द्ध में खदानों का दौर शुरू हो गया। मार्ग के दोनों ओर पहाड़ों और जमीन से विस्फोटक आदि के द्वारा निकाले गए विशालकाय पत्थरों के यथेष्ट आकार में टुकड़े करने का कार्य प्रचुर मात्रा में हो रहा था। इस कारण सूक्ष्म रेतीले कण वातावरण में व्याप्त थे। धुंधलाए वातावरण में गतिमान आचार्यप्रवर का समत्व अडोल था। पूज्यप्रवर ने मार्ग में कुछ दूरी वाले कच्चे पथ को स्वीकार किया। जिससे कुछ घुमाव अवश्य टला, किन्तु मार्ग के कुछ उबड़-खाबड़पन को स्वीकार करना पड़ा। हर परिस्थिति में आचार्यप्रवर का वीतराग भाव अबाधित ही प्रतीत हो रहा था। साध्वीप्रमुखाजी के मार्गस्थल प्रवास स्थल के बाहर आचार्यप्रवर कुछ क्षण आसीन हुए। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल से यह स्थान छह सौ मीटर से भी ज्यादा दूरी पर स्थित था। लगभग १०.२ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर सरसडंगाल में स्थित राजकीयकृत मध्य विद्यालय में पधारे।

शिव मंदिर प्रांगण में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन में अच्छी बातें रहें तो आदमी का जीवन सरस बन सकता है। सरस को (उसके अक्षरों को) सीधा रखें या उल्टा कर दें, वह सरस ही रहता है। इस बात से यह प्रेरणा ली जा सकती है कि आदमी के सामने कैसी भी स्थितियां आ जाएं, उसके जीवन में सरसता रह सकती है। भीतर में द्वेष की भावना है तो बाहर की सरसता का कितना और क्या महत्त्व हो सकता है। आदमी भीतर से सरस रहे तो विशेष बात हो सकती है।

मैं झारखंड के एक छोटे से गांव में बैठा हूं। संभवतः शिवजी के मंदिर का स्थान है। यहां के लोगों में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के रूप में धर्म रहे तो जीवन में पवित्रता रह सकती है।

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए। श्री दिलीप लाला ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपने भावोद्गार व्यक्त किए।

इस आदिवासी क्षेत्र में भी स्थानीय ग्राम्यजनों में आचार्यप्रवर के दर्शन की ललक प्रगाढ़ता लिए

दिखाई देती है। आज भी दिन-रात्रि में सैंकड़ों ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। ग्रामीणों की भक्ति भावना उनकी भावविभोर मुखाकृति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर झलक रही थी।

पश्चिम बंगाल में मंगल प्रवेश

१३ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः झारखंड की सप्तदिवसीय यात्रा परिसम्पन्न कर पश्चिम बंगाल की सीमा में प्रवेश किया। इस अवसर के साक्षी बनने हेतु पश्चिम बंगाल के विभिन्न क्षेत्रों और विशेष रूप से कोलकाता महानगर के सैंकड़ों श्रद्धालु कल ही पहुंच गए थे। आज प्रातःकाल तक भी लोगों के आने का क्रम जारी था। आचार्यप्रवर ने प्रातः झारखंड के सरसडंगाल से पश्चिम बंगाल स्थित तुमोनी के लिए प्रस्थान किया। मार्गस्थ पितरगड़िया के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। मेवाड़ के आशाहोली के एक भावविभोर ब्राह्मण परिवार ने अपने घर और व्यावसायिक प्रतिष्ठान के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन किए। भैंरूलाल ब्राह्मण परिवार के लोगों ने पूज्यप्रवर से अपने घर में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने मार्ग में कुछ क्षण रुककर उन्हें मंगलपाठ सुनाया और एक मुनि को उनके घर में भेजा। ब्राह्मण परिवार ने फलों और पेयजल के द्वारा श्रद्धालुओं की आवभगत भी की। आकाश में उमड़-घुमड़ रहे बादल सूर्य के आतप को रोक रहे थे, किन्तु उनके कारण हो रही उमस आचार्यप्रवर के तन को श्वेद बिन्दुओं से नहला रही थी।

परम पावन आचार्यप्रवर ने ज्यों ही झारखंड की सीमा को अतिक्रांत कर पश्चिम बंगाल की सीमा में चरण रखे तो जयघोषों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। बंगाली महिलाओं ने शंख ध्वनि और उललूक नाद द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। अपने सांस्कृतिक परिधान पहने आदिवासी लोग ढोल की थाप पर थिरक रहे थे। उन्हें विधि की जानकारी देकर रोका गया। उन्होंने करबद्ध होकर आचार्यप्रवर के पादाम्बुज में अपनी प्रणति अर्पित की।

पश्चिम बंगाल के बायोटेक्नालॉजी, स्टेटिक्स और इंटीमेंशन विभाग के मंत्री श्री अशीष बनर्जी ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री श्रीमती ममता बनर्जी, तृणमूल कांग्रेस प्रमुख श्री सुव्रतो मुखर्जी तथा अपने विधानसभा क्षेत्र की समस्त जनता की ओर से आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने पश्चिम बंगाल में प्रवेश के साथ वीरभूम जिले में प्रवेश किया। रामपुरहाट के एसडीपीओ श्री धृतिमान सरकार ने भी आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की।

पश्चिम बंगाल की सीमा में आचार्यप्रवर के स्वागत में अनायास समायोजित कार्यक्रम में कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमल दुगड़, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद तथा महामंत्री श्रीमती सूरज बरड़िया ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पश्चिम बंगाल के मंत्री श्री आशीष बनर्जी ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत-अभिनन्दन किया।

आचार्यप्रवर ने संस्कृत भाषा में प्रदत्त अपने उद्बोधन में कहा--'हमारी अहिंसा यात्रा हो रही है। इस अहिंसा यात्रा में हमने अनेक राज्यों का स्पर्श किया, पश्चिम बंगाल का भी पहले स्पर्श किया, अब पुनः पश्चिम बंगाल में प्रविष्ट हुए हैं। इस प्रदेश में अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का प्रसार हो।

करीब १०.२ किमी का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर तुमोनी स्थित श्यामपहाड़ी श्री रामकृष्ण शिक्षापीठ के अंतर्गत संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के शिक्षक वर्ग ने शंख ध्वनि और उललूक नाद के द्वारा आचार्यप्रवर के पदांबुज में अपनी भावनाएं समर्पित कीं।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भाव और मन का गहरा संबंध है। मन पर भाव उतरते हैं अथवा यों कहें कि मन के भीतर भाव उभरते हैं। कर्मबन्धन या कर्मक्षय में मुख्य भूमिका भावों की रहती है। कर्म के क्षेत्र में वाणी और कार्य की चेष्टा गौण और मानव मन मुख्य हैं, ऐसा प्रतीत होता है। विषयासक्त मन बंधनकारक और विषयमुक्त मन या विषय मुक्ति की साधना करने वाला मन मुक्ति प्रदायक बन जाता है। मन की मलिनता आदमी को बंधन की ओर ले जाने वाली हो सकती है। भाव जीव का स्वरूप है। भावना अथवा भाव अध्यात्म की दृष्टि से बहुत ध्यातव्य है। भावना से नुकसान तो भावना से कल्याण भी हो सकता है। साधक अपनी भावना को विशुद्ध रखने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से पृथक्-पृथक् रूप में दो स्वागत गीत प्रस्तुत किए गए। कोलकाता तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री तेजकरण बोथरा, साउथ हावड़ा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री शिखरचंद लूणावत, रामपुरहाट संघ के मंत्री श्री सुशील बांठिया, उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री जतन पारख, कोलकाता महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती अमराव चोरड़िया, साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री विजयसिंह चोरड़िया और साउथ हावड़ा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती लीला चोरड़िया ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी। संसारपक्ष में पश्चिम बंगाल से संबद्ध मुनि रत्नकुमारजी ने पूज्यप्रवर के चरणारविंद में अपने भावसुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्मान अर्पण समारोह का समायोजन

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तुलसी साधना शिखर राजसमन्द के तत्त्वावधान में आचार्य महाश्रमण सेवा सम्मान-२०१७ प्रदान करने का उपक्रम रहा। तुलसी साधना शिखर के महामंत्री श्री गणेश डागलिया ने संस्थान के विषय में अवगति दी। संस्थान के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मण कर्णावट ने काव्य स्वरों में अपने भावों को अभिव्यक्त किया। संस्थान के उपाध्यक्ष श्री सवाईलाल पोखरना ने प्रशस्तिपत्र का वाचन किया। डॉ. यशवंत कोठारी को पुरस्कार प्रदान स्वरूप प्रशस्ति पत्र और पुरस्कार राशि एक लाख ग्यारह हजार रुपए का चेक प्रदान किया गया। डॉ. यशवंत कोठारी ने पुरस्कार स्वीकृति भाषण प्रस्तुत करते हुए पुरस्कार राशि में २१ हजार रुपए जोड़कर तुलसी साधना शिखर को शिक्षा कार्यों में सहयोग हेतु देने की भावना व्यक्त की। संस्थान के कार्याध्यक्ष श्री भंवरलाल बागरेचा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मंत्री श्री अरुण कोठारी ने किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'अभी सेवा-सम्मान का कार्यक्रम चला। आदमी के जीवन में सेवा का बड़ा महत्त्व होता है। जीवन में दूसरों के लिए कुछ करना विशेष बात होती है। समाज का रूप निखारने में सेवा का भी योगदान रहता है। सेवा विभिन्न रूपों में हो सकती है। दूसरों की सेवा से चित्त को संतोष मिल सकता है। अभी यशवंतजी कोठारी की सेवा का उल्लेख किया गया। ऐसा ज्ञात हुआ कि ये अनेक उपक्रमों से जुड़े रहे हैं। जीवन में शांति रखते हुए पारमार्थिक संदर्भों में दूसरों के लिए कुछ करना महत्त्वपूर्ण बात होती है। अवस्था आने के बाद भी निट्ठल्ला नहीं बैठना चाहिए। यशवंतजी भविष्य में भी आध्यात्मिक सेवा के क्रम को बनाए रखें, मंगलकामना।'

आज मध्याह्न में कृष्णवर्णीय बादलों ने आकाश को आच्छादित कर दिया। कुछ समय पश्चात तेज हवा के साथ तेज वर्षा प्रारंभ हो गई। वर्षा के दौरान हो रही बादलों की अति तीव्र गड़गड़ाहट और

बिजलियों की कड़कड़ाहट भय का वातावरण उत्पन्न कर रही थी। थोड़ी ही देर में प्रवास से कुछ दूरी पर भयंकर आवाज के साथ बिजली गिरी। बिजली की चपेट में आने वाले वृक्ष क्षणभर में जले हुए ठूंठ बन गए। मूसलाधार रूप में काफी देर बरसने के बाद वर्षा थम गई। वर्षा के बाद ठंडी बयार बहने लगी और प्रातःकाल से वातावरण में व्याप्त उमस से निजात मिली।

रामपुरहाट में पावन पदार्पण

१४ मई। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः तुमोनी से रामपुरहाट के लिए प्रस्थान किया। आज रविवार होने के कारण आसपास के क्षेत्रों और कोलकता के श्रद्धालुओं के लिए आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचने में सुविधा हो गई। इस कारण सैंकड़ों श्रद्धालु आज आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित थे। आज के विहार पथ के दोनों ओर भी खदानें स्थित थीं और उनके आसपास पत्थरों के टुकड़े करने के लिए संसाधन लगे हुए थे, किन्तु यह कार्य आज बंद रूप में दिखाई दिया। आचार्यप्रवर की यात्रा के संदर्भ में इस व्यवसाय से जुड़े लोगों ने निर्णय लिया कि जब तक आचार्यप्रवर का आज का विहार सम्पन्न न हो जाए, तब तक सारा काम बंद रहेगा ताकि रेत का गुबार हवा में न उड़े और किसी तरह की परेशानी न हो। विहार के दौरान इस व्यवसाय से जुड़े अनेकानेक लोग आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। विगत कल हुई वर्षा के कारण आज भी वातावरण सूक्ष्म रेतीले कणों से काफी मुक्त रहा। कालीडांगा स्थित श्री श्रीरामकृष्ण सत्यानंद दृष्टिदीप शिक्षा निकेतन के बच्चों ने करबद्ध खड़े होकर पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। आचार्यप्रवर मार्ग के दायीं ओर खड़े उन बच्चों के पास पधारे तो उन्होंने 'राष्ट्रगान' का संगान कर आचार्यप्रवर के प्रति सम्मान का भाव व्यक्त किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। कालीडांगा के सैंकड़ों लोगों ने सड़क पर बैठकर पंचांग वंदना करते हुए पूज्यप्रवर के पादाम्बुज में अपनी श्रद्धासिक्त भावांजलि अर्पित की। आचार्यप्रवर ने कुछ क्षण अपने चरण थाम कर उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। पश्चिम बंगाल सरकार के मंत्री श्री आशीष बनर्जी ने मार्ग में आचार्यप्रवर की अगवानी की और करीब तीन किलोमीटर तक आचार्यप्रवर की उपासना में पैदल चले।

रामपुरहाट में आचार्यप्रवर का पदार्पण स्थानीय एकमात्र तेरापंथी परिवार को ही नहीं, अन्य जैन एवं जैनेतर समाज को भी अतिशय आह्लादित बनाए हुए था। चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण था। स्वागत जुलूस में विभिन्न वर्गों के लोगों की उपस्थिति उनकी आंतरिक प्रसन्नता को दर्शा रही थी। बंगाली महिलाओं ने शंख ध्वनि और उललूक नाद के द्वारा शांतिदूत आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया। मार्ग के दोनों ओर करबद्ध खड़े लोग आचार्यप्रवर के प्रति प्रणति अर्पित कर मंगल आशीष प्राप्त कर रहे थे। लगभग १०.३ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर रामपुरहाट के बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन शासन में नमस्कार महामंत्र को अत्यधिक श्रद्धा का स्थान प्राप्त है। इसमें सबसे पहले अर्हतों को नमस्कार किया गया है। धर्म के क्षेत्र में सर्वोच्च मनुष्य अर्हत् होते हैं, उनसे बड़ा कोई आदमी नहीं हो सकता। वे अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। उनसे कुछ भी अज्ञात नहीं होता। इसलिए उन्हें सर्वज्ञ भी कहा जाता है। वीतराग बने बिना कोई अर्हत नहीं बन सकता। मोहकर्म को क्षीण किए बिना कोई वीतराग नहीं बन सकता।

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से रामपुरहाटवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए।

पश्चिम बंगाल के मंत्री डा. आशीष बनर्जी ने कहा--'आज के इस पवित्र दिन में मैं गुरुजी को शत-शत प्रणाम करता हूं। मैं यह जानकर अवाक् रह गया कि गुरुजी ४०,००० से ज्यादा किमी की पदयात्रा कर ली है और हजारों किमी की पदयात्रा के संकल्प के साथ यात्रायित हैं। जिन तीन संकल्पों को जन-जन तक पहुंचाने का आप कार्य कर रहे हैं, आज समाज को उनकी सख्त जरूरत है। पश्चिम बंगाल सरकार राजकीय अतिथि का सम्मान आपके चरणों में अर्पित कर स्वयं को धन्य महसूस कर रहा हूं। ऐसे कार्यक्रम में उपस्थित होकर मैं स्वयं को कृतार्थ समझता हूं। मैं आपका आंतरिक अभिनन्दन करता हूं और अहिंसा यात्रा के सफल होने की शुभकामना करता हूं।'

रामपुरहाट समता महिला समिति की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। स्वाध्यायी श्री श्रीचंद बोथरा, रामपुरहाट माहेश्वरी समाज की ओर से श्री गोपाल मिश्रा, रामपुरहाट जैन संघ के मंत्री श्री सुशील बांठिया ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी अभिव्यक्ति दी। दखलमाटी के बोथरा परिवार ने अपने आराध्य के अभिनन्दन में गीत को प्रस्तुति दी।

आज रामपुरहाट के एसडीओ श्री सुप्रियोदास और एसडीपीओ श्री धृतिमान सरकार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। रामपुरहाट में तेरापंथ समाज का एक परिवार निवासित है। यहां से करीब तीन किमी दूरी पर दखलमाटी में बोथरा परिवार की तीन शाखाएं प्रवासित हैं। आज के प्रवास की व्यवस्थाओं में बोथरा परिवार निष्ठा से जुटा हुआ था व रामपुरहाट से पन्द्रह किमी दूरी पर नलहटी में ५ तेरापंथी परिवार, वहां से लगभग सत्रह किमी दूरी पर स्थित मुरारोई में ८ तेरापंथी परिवार और वहां से करीब तेरह किमी दूरी पर स्थित राजग्राम में एक तेरापंथी परिवार प्रवासित है। उन परिवारों के सदस्यों ने भी आज पूज्यप्रवर के दर्शन और उपासना का लाभ लिया।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/-स्व. श्रीमती मैनादेवी बैद (धर्मपत्नी स्व. श्रीचंदजी बैद, रतनगढ़-कोलकाता) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू शुभकरण-संगीता, सुपौत्री शालिनी बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्री सिद्धराजजी भंडारी (जोधपुर) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती जतनकंवर, सुपुत्र व पुत्रवधू मनीष-शालिनी, सुपौत्र मिलन व सायन भंडारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/-स्व. श्री गणपतलालजी खाब्या (बोरियापुरा-मुम्बई) की २५वीं पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता, सुपुत्र पारस, राजू, मनोज खाब्या द्वारा प्रदत्त।

सम्पर्क के लिए हमारा पता है:-

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं.-७३८४४३६५६०, ७३८४४३६५६२
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी